'गदर के फूल' की क्रांति तारिका – बेगम हजरतमहल

डॉ मंजरी खन्ना,

एसोसिएट प्रोफेसर (हिंदी),
नारी शिक्षा निकेतन स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
कैसरबाग, लखनऊ।

शोध सारांश

इतिहास में, विशेषकर अवध के इतिहास में गहरी अभिरुचि रखने वाले 20वीं शताब्दी के प्रख्यात रचनाकार अमृतलाल नागर जी ने सत्तावनी क्रांति के संबंध में भारतीय दृष्टिकोण से लिखे गए इतिहास के अभाव में गदर के ठीक 100 वर्ष पश्चात सन् 1957 में अपने सर्वेक्षण कार्य "ग़दर के फूल" द्वारा ऐतिहासिक सत्य को खंगालने का प्रयास किया।उन्होंने अवध के विभिन्न प्रांतों के सर्वेक्षण द्वारा प्राप्त जानकारियों को तथा अन्य माध्यमों से प्राप्त सूचनाओं का गंभीर विवेचन विश्लेषण करने के उपरांत स्वविवेक के आधार पर जो निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं वो तदयुगीन इतिहास ग्रंथों से कहीं अधिक प्रमाणिक जान पड़ते हैं। उनका मानना था कि 1857 का यह संग्राम मात्र सिपाही विद्रोह नहीं था वरन जन आंदोलन था। जिसमें देसी रजवाड़ों और रियासतों के स्वामियों के साथ–साथ सामान्य जनता, स्त्री, पुरुष, हिंदू ,मुस्लिम सभी ने संगठित होकर सक्रिय भाग लिया था। जहां तक स्त्रियों की भागीदारी का प्रश्न है नागर जी के अनुसार रानियों, बेगमो वैश्याओं और साधारण घर की स्त्रियों ने भी इस राष्ट्रीय युद्ध में अपने तेज का परिचय दिया था। संग्राम के महानायको के साथ–साथ नारी समाज में देशभक्ति का जज्बा जागृत कर उन्हें संगठित करने और क्रांति का शंखनाद फूटने का कार्य अवध की क्रांति तारिका बेगम हजरतमहल ने पूरी ईमानदारी से किया था। सर्वेक्षण के दौरान नागर जी को अवध के विभिन्न प्रांतों में बेगम की सक्रियता, तेजस्विता, शीलवान स्वरूप तथा गदर काल में विभिन्न जिलों के सामंतों, तालुकेदारो को एकजुट रखने के लिए उनके द्वारा किए गए तूफानी दौरो का परिचय प्राप्त होता है। नागर जी के अनुसार रानी लक्ष्मीबाई की तरह बेगम द्वारा बनाए गए स्त्रियों के सैन्य संगठन और जासूसी संगठनों ने बड़ी ही सफलता और कुशलता के साथ कार्य करते हुए अंग्रेजों को कड़ी चुनौती दी थी।लखनऊ के अंतिम मोर्चे, आलमबाग की लड़ाई में बेगम स्वयं शास्त्र धारण कर रणक्षेत्र में उतरी थी। बेगम की जुझारू प्रवृत्ति की कार्यकुशलता और उनकी सूझ बूझ की प्रसंशा ईनिस,चार्ल्स बॉल, रसल आदि अन्य अनेक इतिहासकारों ने भी की है परंतु उनका आरोप है कि बेगम हजरतमहल ने अपने बेटे बिरजीसकदर के हितों की रक्षा के लिए अवध को एकजुट कर अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह के लिए उकसाया था किंतु नगर जी इस बात को मानने के लिए तैयार नहीं उनके मतानुसार बेगम का स्फूर्तिदायक, शौर्यपूर्ण चरित्र इस बात का प्रमाण है उन्होंने जो किया देशभक्ति की भावना से अभिप्रेरित होकर किया अन्यथा आपसी वैमनस्य और फूट, भय और आतंक के उस प्रलयकाल में एक स्त्री द्वारा हजारों लोगों का अटूट विश्वास प्राप्त कर लेना संभव न था। एक स्त्री भले ही कितनी ही चतुर क्यों ना हो केवल अपने बेटे या नजर बंद पति के नाम पर वफादारी की भावना नहीं जगा सकती। जब तक सामूहिक स्वार्थ की समस्या ना हो ,समूह के स्वाभिमान का प्रश्न ना हो तब तक ऐसा संगठन नहीं हो सकता जैसा अवध में बेगम हजरत माल के द्वारा किया गया था। उसके पीछे निश्चय ही खरे विद्रोह का तप था। निष्कर्षतः नागर जी कहते हैं कि अवध में क्रांति का इतिहास वास्तव में बेगम हजरतमहल का इतिहास है। बचपन से लेकर राजमाता बनने तक सामंती जीवन का नरक भोगने के बावजूद कुंठा और वेदना से जड़ीभूत न होने वाला बेगम का क्रांतिकारी चरित्र संपूर्ण मानव जाति के लिए एक आदर्श है।

मुख्य शब्द – नागर जी, गदर, क्रांति, बेगम हजरतमहल, अवध।

बीसवीं शताब्दी के साहित्यिक फलक को अपने इंद्रधनुषी व्यक्तित्व से रंगने वाले युगदृष्टा, युग सृष्टा कालजयी रचनाकार अमृतलाल नागर का इतिहास और पुरातत्व प्रेम सर्वविदित है, सर्वविख्यात है। उनके द्वारा रचित शतरंज के मोहरे, सातघूंघट वाला मुखड़ा, करवट, पीढियाँ आदि उपन्यास इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। अवधवासी होने के कारण अवध के इतिहास और अवध की संस्कृति से विशेष लगाव रखने वाले नागर जी ने सन् 1857 के स्वाधीनता संग्राम में अवध क्षेत्र के ऐतिहासिक योगदान को 'गदर के फूल' नामक रचना में अत्यंत रोचक अंदाज में वर्णित किया है। रिपोर्ताज, डायरी, संस्मरण, रेखाचित्र, साक्षात्कार, सर्वेक्षण आदि विधाओं के मिले–जुले रूप का आभास देने वाली यह कृति निश्चय ही अद्‌भुत है, अप्रतिम है।

नागर जी गदर को केंद्र में रखकर एक उपन्यास लिखना चाहते थे। अपने ऐतिहासिक उपन्यास शतरंज के मोहरे हेतु सामग्री संचयन के दौरान उन्होंने अंग्रेजों के आतंक और निरंकुश शोषण की दमनकारी नीतियों के विरुद्ध छिड़ने वाली सत्तावनी क्रांति के प्रत्यक्ष अनुभवों के क्रमशः मन्द पड़ते हुए स्वरों को सुना। उन्होंने अनुभव किया कि गदर के साक्षात्दर्शी व्यक्ति अत्यल्प हैं और उनकी पीढ़ियों में ही उनके संस्मरण साँस ले रहे हैं। "सत्तावनी क्रांति के सम्बन्ध में भारतीय दृष्टिकोण से लिखे गए इतिहास के अभाव में जनश्रुतियों के सहारे ही इतिहास की गैल पहचानी जा सकती है।"[1] अतः जिज्ञासु और अनुसंधानात्मक वृत्ति संपन्न नागर जी सन् 1957 में गदर के फूल चुनने के लिए अवध के बाराबंकी, सीतापुर, गोंडा, बहराइच, रायबरेली आदि जिलों का श्रमसाध्य दौरा करते हैं और घूम–घूम कर ऐसे बुजुर्गों से संपर्क साधते हैं जिन्होंने अपनी बाल्यावस्था में गदर में भाग लेने वालों के मुख से गदर सम्बन्धी सच्ची कहानियाँ सुनी थी। अपनी प्राश्निक कला से जनमानस की स्मृतियों को कुरेद–कुरेद कर तथा जनसामान्य में व्याप्त किंवदंतियों को सुनकर नागर जी गदर की लुप्तप्राय अलिखित जानकारियां एकत्र करते हैं और गदर का एक जीवन्त इतिहास रचते हैं। एक ऐसा इतिहास जो निष्पक्ष दृष्टि से गदरकालीन महत्वपूर्ण तथ्यों के साथ–साथ उस महासंग्राम में अपने प्राणों की आहुति देने वाले उन अल्पज्ञात, देशभक्त वीरों को भी प्रकाश में लाता है, जिनपर सर्वसाधारण की दृष्टि नहीं पड़ी।

नागर जी का यह शोधकार्य पूर्णतः वैज्ञानिक है। चूंकि वह सर्वेक्षण द्वारा प्राप्त जानकारियों को, जनश्रुतियों को ज्यों का त्यों स्वीकार नहीं करते, वरन् अंग्रेजी, हिंदी और उर्दू के प्रसिद्ध इतिहासकारों के इतिहास ग्रंथों, अवध गजेटियर, फैजाबाद गजेटियर, राजाओं नवाबों के परिचय ग्रंथों, लखनऊ दैनिक तथा स्वतंत्र भारत में प्रकाशित लेखों, पुरानी फाइलों में दबे सरकारी पत्रों के निकष पर उन सूचनाओं को परखते हैं, मन ही मन तर्क–वितर्क करते हैं और फिर स्वविवेक के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत करते हैं। यही कारण है की गदर के सौ वर्ष बाद सन् 1957 में रचे जाने पर भी 'गदर के फूल' का सत्य तद्युगीन रचित इतिहास ग्रंथों से कहीं अधिक प्रामाणिक जान पड़ता है। तभी तो प्रसिद्ध समालोचक डॉ. रामविलास शर्मा ने नागर जी की सराहना करते हुए लिखा है – "नागर जी को इतिहास से प्रेम है और इतिहास में भारत के इतिहास, भारत के इतिहास में अवध के इतिहास से और अवध के इतिहास में राणा बेनीमाधो और हजरतमहल के इतिहास से उन्हें विशेष प्रेम है। अवध के इतिहास की जितनी गहरी जानकारी नागर जी को है, उतनी मेरी परख के अनुसार किसी इतिहासकार को नहीं है। जानकारी के अलावा उनकी मर्मदृष्टि तथ्यों की तह के नीचे सत्य की भागीरथी का पता सहज बुद्धि से लगा लेती है, जो उनके कलाकार की विशेषता है।"[2]

गदर के फूल में नागर जी की सर्वाधिक मौलिक स्थापना यह है कि सन् 57 का यह

संग्राम मात्र 'सिपाही विद्रोह' नहीं था वरन जन आंदोलन था जिसमें देशी रजवाड़ों और रियासतों के स्वामियों के साथ–साथ सामान्य जनता – स्त्री, पुरुष, हिंदू, मुस्लिम आदि सभी ने संगठित होकर सक्रिय भाग लिया था। नवाबगंज बाराबंकी के युद्ध में शहीद होने वाले चहलारी के 18 वर्षीय ठाकुर बलभद्र सिंह, गोण्डा के राजा देवीबख्श तथा रायबरेली के राणा वेणी माधव इस महासंग्राम के तीन वीर पराक्रमी महानायक थे और मौलवी अहमदुल्ला, अजीमुल्ला खाँ, नाना साहेब पेशवा, अमीर अली, बाबा रामचरणदास, तात्या तोपे, हरदत्त सिंह, रोइया के नरपत सिंह, महोना के दिग्विजय सिंह, चर्रा के राजा ज्योत सिंह, लखनऊ के राजा जियालाल नुसरतजंग तथा अन्य अनेक रैकवार राजपूतों ने उन्हें अपना भरपूर सहयोग दिया था।

देश के इस प्रथम स्वाधीनता संग्राम में जहां तक स्त्रियों की भागीदारी का प्रश्न है, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की वीरता के चर्चे तो जगप्रसिद्ध है किंतु अवध क्षेत्र की नारियों की अहं भूमिका से कम ही लोग परिचित हैं। इस सम्बन्ध में नागर जी का दृढ़ मत है कि सत्तावनी क्रांति में जनजीवन के प्रायः प्रत्येक वर्ग की स्त्री ने भाग लिया था। उनके अनुसार "रानियों, बेगमों, वेश्याओं और साधारण घरों की स्त्रियों ने भी इस राष्ट्रीय युद्ध में अपने तेज का परिचय दिया।"[3] अपने मत के समर्थन में उन्होंने सुंदरलाल द्वारा लिखित 'भारत में अंग्रेजी राज्य' का उदाहरण देते हुए लिखा है – "अवध निवासियों की इस आजादी की लड़ाई में बेगम हजरतमहल के आधीन अवध की अनेक स्त्रियाँ तक मर्दाना वेष पहनकर हथियार बांधकर अपने अलग दल बनाकर लड़ रही थी"[4], आगे सुरेन्द्रनाथ सेन की पुस्तक के हवाले से उन्होंने लिखा है "कम प्रतिष्ठित पंक्तियों की स्त्रियों ने नगर की रक्षा के निमित्त अपने प्राण अर्पित कर दिये।"[5] उन्हीं की पुस्तक में गॉर्डन एलेक्जेंडर द्वारा दिए गए वक्तव्य का उल्लेख भी नागर जी ने किया है "सिकन्दरबाग की लड़ाई में अनेक हब्शिने भी लड़ रही थी। वह जंगली बिल्लियों की तरह लड़ रही थी और उनकी मृत्यु हो जाने से पहले यह पता ही न चल सका कि वे औरतें थी।"[6] इसी सम्बन्ध में नागर जी ने बारूद से सुरंगे उड़ाने वाली 'जुलजुल बुढ़िया' और पीपल के वृक्ष से अनेक गोरों को धराशायी करने वाली एक वीरांगना स्त्री ऊदा देवी का जिक्र भी किया है। उनका मानना था कि पर्दा प्रथा के कट्टर पोषक भारत देश की नारियों का गदर में इस प्रकार भाग लेना निश्चय ही क्रांति का सूचक है।

यह जानकर आश्चर्य होगा कि संग्राम के महानायकों के साथ–साथ नारी समाज में देशभक्ति का जज्बा जागृत कर उन्हें संग्रहित करने और क्रांति का शंखनाद फूंकने का कार्य किया था एक स्त्री ने – बेगम हजरतमहल ने, जो 'गदर के फूल' की क्रांति तारिका है। इस क्रांति तारिका का अन्त तक साथ दिया था एक दूसरी निडर और साहसी स्त्री ने – तुलसीपुर की महारानी ने। जहां नागर जी ने बेगम हजरतमहल की तुलना लक्ष्मीबाई से की है वहीं गोण्डा से लगभग चालीस पैंतालीस मील दूर स्थित तुलसीपुर के लोगों के बीच वहां की महारानी रानी लक्ष्मीबाई के रूप में आज भी प्रसिद्ध है। गोण्डा के पत्रकार श्री वी० पी० सिन्हा के शब्दों में "तुलसीपुर की रानी हमारे यहाँ की लक्ष्मीबाई थी।"[7] हालांकि तुलसीपुर की महारानी के विषय में नागर जी को अधिक सुनने को नहीं मिला फिर भी अवध गजेटियर में दी गई अति संक्षिप्त जानकारी का उल्लेख करते हुए उन्होंने लिखा है कि अपने पति दृगनारायण सिंह के बंदी बनाए जाने पर उसने अपने राज्य की विरोधी शक्तियों का दमन करते हुए कुशलतापूर्वक शासन चलाया और क्रांतिकारियों को पूरा–पूरा सहयोग दिया। ऐसा माना जाता है कि वे भी बेगम का साथ देते हुए उनके साथ नेपाल चली गई थी और संभवतः वहीं उनकी मृत्यु हो गई।

अवध की क्रांति तारिका बेगम हजरतमहल के विषय में नागर जी विलियम रसल का मत उद्धृत करते हुए लिखते हैं "वह अपने बादशाह पति से अच्छी मर्द थी।"[8] उन्होंने गदरकाल में सारे अवध में उत्तेजना भर दी थी। स्वयं अपना मत नागर जी ने इन शब्दों में व्यक्त किया है– "वाजिदअली शाह के सामने जब हम उनके 'परीखाने' की एक परी, उनके एक पुत्र की माता बेगम हजरतमहल के व्यक्तित्व को देखते हैं तब वो बेगम के सामने उनके पैरों की धोवन भी नहीं ठहरते। बचपन में ही वाजिदअली शाह की कुटनियों के चुंगुल में फँसकर नर्तकी बनने वाली अज्ञात कुलशीला स्त्री का विद्रोह सही तौर पर समझने की चीज़ है।"[9] नागर जी के अनुसार बेगम हजरतमहल के वंश, जन्म, बचपन का कोई प्रमाणिक इतिहास उपलब्ध नहीं है। विभिन्न सूत्रों से प्राप्त जानकारियों, जिनमें बेगम के प्रपौत्र श्री सज्जाद अली मिर्जा कौकब कदर द्वारा दी गई जानकारी भी सम्मिलित है, के आधार पर उन्होंने लिखा है कि या तो धन के लोभवश इनके माता–पिता ने इन्हें शाही भोग विलास हेतु बेच दिया था या फिर अम्मन और अमामन नामक दो कुटनियों द्वारा ये कहीं से उड़ा कर लाई गई थी और नृत्य की शिक्षोपरान्त वाजिदअली शाह के हरम में उन्हें 'महकपरी' के नाम से दाखिल किया गया था। वाजिदअली शाह ने अपनी प्रेमपरियों का विवरण लिखते हुए उन्हें 'जनेखानगी' लिखा है। नागर जी के मतानुसार बचपन से ही सामाजिक यातना का शिकार बेगम ने हरम की जिन्दगी को गहन आंतरिक विद्रोह के साथ स्वीकार किया होगा। सन् 1856 में वाजिदअली शाह के पदच्युत होने और अवध के कंपनी राज्य में मिलने, 30 जून सन् 1857 में चिनहट युद्ध में बरकत अहमद के नेतृत्व में स्वदेशी सेनाओं की विजय के उपरांत 7 जुलाई 1857 में बिरजीस कदर की ताजपोशी के साथ ही छब्बीस सत्ताईस वर्ष के भरे यौवन काल में बेगम हजरतमहल राजमाता बन गई और तब "कोख के जाये को ऐतिहासिक परिस्थितियों के कारण बाप की राजगद्दी मिल जाने पर हजरतमहल उन ऐतिहासिक परिस्थितियों के प्रति दिल से वफादार हो गई"[10] और फिर "सुप्त विद्रोह ही मातृत्व की शक्ति लेकर अपने बेटे का राज्य बचाने के लिए इस प्रकार विकसित हुआ कि राष्ट्रीयता का भाव सिद्ध कर सबके सदा के लिए अनुकरणीय आदर्श बन गया।"[11]

सर्वेक्षण के दौरान नागर जी जिन जिन लोगों से मिलते हैं वे सभी अपने पूर्वजों के माध्यम से गदरकाल में बेगम की सक्रियता, तेजस्विता, शीलवान स्वरूप और उनके प्रति लोगों के मान सम्मान का परिचय देते हैं। सबसे वृद्ध व्यक्ति जिनसे नागर जी की भेंट हुई थी, वे थे नवाबगंज बाराबंकी के 114 वर्षीय साहबदीन उन्होंने बेगम को स्वयं अपनी आंखों से देखा था। उनके अनुसार - "हाँ देखा रहै। हम एक महीना भिठौली में रहेन, तब देखा रहै – – – – जिस अउरत के सीलधरम होत है वइसी रहै, देउता रहै।"[12] अटरिया जिला सीतापुर के 100 वर्ष से अधिक के प्रयागदत्त शुक्ल ने नागर जी के यह पूछने पर कि गदरकाल में प्रजा किसका साथ देती थी? बताया कि "अंग्रेजन के साथ सब रहै बाकी मान बेगम का देत रहे।"[13] बाराबंकी जिले के दीनदयाल दीक्षित, जिनके पुरखों ने गदर में भाग लिया था, ने अपनी लिखित जानकारी द्वारा सूचित किया "सन् 1857 की क्रांति में लखनऊ पतन के पश्चात् बेगम हजरतमहल युवराज बिरजीस कदर, नाना धोंडूवंत, राणा वेणी माधव सिंह, बौंडी के राजा हरदत्त सिंह तथा गोंडा नरेश राजा देवी बख्श सिंह गुप्त रूप से यही एकत्र हुए थे। नवाबगंज, बहराम घाट आदि स्थानों पर देशभक्ति वीरों ने मोर्चे लगा दिए थे ताकि पीछा करने वाली अंग्रेजी सेना को मार्ग में ही रोका जा सके। – – प्रातः काल वे घाघरा के उस पार राजा बौंडी की गढ़ी में पहुंच गए। यहां बेगम हजरतमहल ने अपने बहुमूल्य जेवरों को रक्षकों में पुरस्कार स्वरूप वितरित किया।"[14] भयारा जिले

बाराबंकी के शेख अब्दुल अली किदवई ने अपने दादा शेख यासीन अली किदवई के हवाले से बताया कि "जब बेगम हजरतमहल ने हार कर लखनऊ छोड़ दिया तब महादेवा में चहलारी के राजा के साथ जितने राजा थे, वह सब इकट्ठा हो गये। बेगम भी थी, चर्दा और बौंडी के राजा भी थे – – – वहां हिंदुओं ने महादेवा जी की मूरत पर हाथ रखकर कसम खाई और मुसलमानों ने कुरान पाक हाथ में लेकर कसम खाई की फिरंगियों से जमकर लोहा लेंगे।"[15] कुर्सी के हाजी साहब ने बताया कि गोरों ने बादशाह वाजिदअली शाह से कहा कि या तो 12 कोस का राज ले लो या सवा लाख रुपए ले लो। इस पर बेगम बोली जहाँ इतनी बड़ी सल्तनत गई वहाँ 12 कोस का क्या होगा।"[16] महादेवा के प्रधान पुजारी महावीर प्रसाद अवस्थी ने सूचना दी कि "जब चिनहट का जुद्ध समाप्त भया तो ये लोग – बेगम, हरदत्त सिंह बौंडी, राजा देवीबख्श गोंडा वाले, राजा गुरुबख्श सिंह रामनगर वाले – वे सब यहाँ पर आयके एकत्र भये – – – आगे का उपाय सोचा कि आप कैसे जुद्ध चलावैगे।"[17] राजा देवीबख्श के कुटुम्बी गोंडा के ठाकुर नौरंगसिंह ने बताया कि "बेगम ने राजा को पत्र लिखा था कि हमारी सहायता करो? इसी से राजा ने उनका साथ दिया।"[18] गोंडा के ही एक एडवोकेट शान्ति प्रसाद शुक्ल ने बादशाह द्वारा राजा देवीबख्श के शौर्य और पराक्रम की परीक्षा सम्बन्धी एक कहानी सुनाते हुए बताया कि "बेगम ने देवीबख्श को बेटा कहकर अपनी गोद में बैठा लिया और इन्होंने भी उन्हें माँ कहा। और तभी से देवीबख्श बेगम का अनन्य भक्त हो गया। सन् 1856 में अवध के अंग्रेजी राज्य में मिलाये जाने के बाद जो घटनाएं सन् 1857 में हुई उसमें देवीबख्श बेगम का शपथबद्ध साथी हुआ – – – देवीबख्श ने कहा कि यह शरीर रहते बेगम का साथ नहीं छोड़ सकता।"[19] केवलपुल, जिला बहराइच के रशीदुद्दीन किदवई जिनके पूर्वजों ने बेगम का साथ दिया था, ने बताया कि "बेगम ने चर्दा में पनाह ली। उसके बाद जब अंग्रेजों ने वहाँ घेरा तो सूरंग की राह से मस्जिदिया के किले में पहुँची – – – जो अंग्रेजों ने बेगम को मस्जिदिया के किले में भी घेरा तो उसके बाद वो वहाँ से मान नाले से महादेवा पहाड़ के करीब एक मौज है वहाँ से सोनार होती हुई नेपाल गई।"[20] पंडरिया, जिला सीतापुर के गुरुप्रसाद दीक्षित ने बताया कि – "बेगम पंडरिया आई, वहाँ पता लगा कि दीक्षित के घर अंग्रेज आये थे तो वहाँ से भागी। नेपाल चली। रास्ते में चहलारी पड़ा। राणा बलभद्र सिंह का नाम बेगम ने सुन रखा था, उनसे मदद मांगी। बलभद्र सिंह ने मदद देना स्वीकार किया।"[21] कुछ लोगों का मानना है कि बेगम संभवतः नेपाल की रहने वाली थी। लखीमपुर खीरी के लोने सिंह के परिवार के ठाकुर साहब ने बताया कि "उस समय मितौली मैं सभी सामंत नेता एकत्र थे। रूइयां वाले नरपत सिंह, गुलाब सिंह, नजीबाबाद के फिरोज़ शाह, लखनऊ के बिरजीस कदर और उनकी मां नेपालिन बेगम साथ आई – – – वाजिदअली शाह ढेर बेगमें किहिन, उनमा यह नैपालिनिउ रहे। वह कहिस कि शहजादा और हमका हमारे मइके मां छोड़ि आव।"[22]

अवध क्षेत्र के विभिन्न जिलों के निवासियों द्वारा प्रदत्त ये सूचनाएं बेगम के स्वाभिमानी और प्रभावशाली व्यक्तित्व का, स्वाधीनता संग्राम में उनकी सक्रिय सहभागिता का किसी न किसी रूप में परिचय देती हैं। नागर जी ने एक स्थान पर लिखा है कि अवध के सम्बन्ध में कुछ भी लिखने वाले सभी अंग्रेज इतिहासकारों – ईनिस, चार्ल्स बॉल मेलिसन, सरहोपग्राण्ट तथा गाबिन्स आदि ने बेगम की बुद्धिमत्ता, चतुराई, पराक्रमशीलता, संगठनात्मक कौशल की प्रशंसा की है। किंवंदतियाँ, जनश्रुतियाँ भी इनकी पुष्टि करती हैं। इन्हीं आधारों पर बेगम के सम्बन्ध में अपने विचार अभिव्यक्त करते हुए नागर जी लिखते हैं – बेगम हजरतमहल का व्यक्तित्व ऊँचे–ऊँचे खानदान वाले मर्द–नामर्दों और बड़े आबरूदारों की

बुज़दिल विलासी बेटियों से कहीं अधिक ऊँचा उठा हुआ दिखलाई देता है। बेगम हजरतमहल वेश्यावर्ग की होकर भी अपने स्वाभिमान की इस शान से रक्षा करने के कारण पूज्य हैं, प्रणम्य है।"[23]

बेगम में अद्‌भुत संगठनात्मक क्षमता थी। उन्होंने गदरकाल में अवध प्रान्त के विभिन्न जिलों को एकजुट करने के उद्देश्य से वहाँ के तूफानी दौरे किये। वहां सभाओं का आयोजन किया और उन सभाओं में विशेष रुप से महादेवा की सामन्त सभा में अपने ओजस्वी भाषण द्वारा नाजिमों, ताल्लुकेदारों, प्रभुखतम हिंदू सामन्तों की सुप्त राष्ट्रीय चेतना को जागृत कर उन्हें अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए संगठित किया। अन्यथा मम्मू खाँ, मौलवी अहमदुल्ला, जनरल बरकत अहमद और सूबेदार शहाबुद्दीन और सूबेदार धमंडी सिंह के साथ–साथ हरदत्त सिंह, गोंडा के राजा देवीबक्श सिंह, बिसेन, जनवार, अहिबन गौड़ कनपुरिया आदि सामन्तों का सहयोग उन्हें कदापि प्राप्त न होता। इसी संदर्भ में नागर जी ने भरावन के जमींदार राजा मर्दन सिंह के इस अपमानजनक वाक्य का जिक्र भी किया है जो बेगम द्वारा की जाने वाली दौड़ धूप का स्पष्ट संकेत देता है – "मैं तुम्हें चरण नहीं दे सकता क्योंकि तुम मेंढक की तरह इधर से उधर उछलती फिरोगी।"[24]

बेगम हजरतमहल ने सामन्तों को संगठित ही नहीं किया वरन् बड़ी ही बुद्धिमानी और कार्यकुशलता के साथ उनका कुशल निर्देशन भी किया। नागर जी लिखते हैं – "जुलाई–अगस्त और आधी सितंबर 1857 तक तूफानी समुद्र में सल्तनत की झंझरी नाव लेकर भी बेगम बड़े साहस पूर्वक आगे बढ़ती रही। मीर फ़िदा, हुसैन कप्तान, उनके भाई मुहम्मद हुसैन नाज़िम, अब्दुल हादी खाँ, कुमेदान मुहम्मद मिर्जा, शरफुद्दौला, हिसामुद्दौला – सभी बेगम से ही नया बल प्राप्त कर आपसी शिकायतों को नज़रअंदाज़ कर स्वतंत्रता संग्राम में आगे बढ़े।"[25] रानी लक्ष्मीबाई की तरह बेगम द्वारा बनाए गए स्त्रियों के सैनिक और जासूसी संगठनों ने बड़ी ही तत्परता कुशलता के साथ कार्य करते हुए अंग्रेजों को कड़ी चुनौती दी।

बेगम हजरतमहल वीर और साहसी प्रकृति की महिला थी। रसल के शब्दों में "बेगम में बड़ी पराक्रमशीलता और योग्यता दिखलाई देती है – – – – बेगम ने हमारे विरुद्ध न खत्म होने वाले युद्ध का ऐलान कर दिया। इन रानियों और बेगमों के शौर्य और स्फूर्ति भरे चरित्रों को देखकर ऐसा लगता है कि ये लोग अपने जनानखानों और हरमों में यथेष्ट रूप से तीव्र बौद्धिक शक्ति सिद्ध कर लेती हैं।"[26] नागर जी ने भी लिखा है कि लखनऊ के ऐशबाग बेलीगारद, मच्छी भवन और रेजिडेंसी पर विरोधी क्रांतिकारियों द्वारा किये गए आक्रमणों की योजना बनाने और उसके कार्यान्वयन में बेगम ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लखनऊ के अंतिम मोर्चे पर आलमबाग की लड़ाई में बेगम स्वयं शस्त्र धारण कर रणक्षेत्र में उतरी थी। बेगम के जुझारू व्यक्तित्व का परिचय देने के लिए नागर जी ने सरफराज बेगम लखनवी द्वारा कलकत्ते की अख्तर महल को लिखे गए पत्र की कुछ पंक्तियां उद्धृत की है – "मैं नहीं समझती थी कि हजरतमहल एसी आफत की परकाला है। खुद हाथी पर बैठकर तिलंगों के आगे–आगे फिरंगियों से मुकाबला करती है।"[27]

युद्ध के दौरान बेगम की सहृदयता और न्यायप्रियता प्रशंसनीय रही। अंग्रेजों की पैशाचिकता और निर्ममता का जवाब उन्होंने स्त्रीयोचित नम्रता से दिया। उन्होंने प्रतिशोध की आग में सुलगते हुए क्रांतिकारियों को बन्दी अंग्रेज स्त्रियाँ और बच्चे सौंपने से स्पष्ट इनकार कर दिया। चार्ल्स बॉल का मत अंकित करते हुए नागर जी ने लिखा है विद्रोही क्रांतिकारियों ने जब कैसरबाग के महलों में कैद अंग्रेज स्त्रियों की हत्या करने के लिए उन्हें मांगा तो "स्त्रीत्व की

मान रक्षा हेतु, उनकी मांग बेगम द्वारा आज्ञार्थक रूप से, जहाँ तक स्त्रियों का सम्बन्ध था, अस्वीकार कर दी गई और उन्हें तुरंत अपनी निगरानी में हरम में बुला लिया।"[28]

बेगम की कार्यकुशलता और सूझबूझ का परिचय देने वाले अनेक प्रसंग हैं। अंग्रेजों का साथ देने वाली हिंदू सिख सेनाओं को मृत्युदंड देने के स्थान पर केवल बन्दी बनाए रखने की आज्ञा देना बेगम की सूझ–बुझ का ही परिचायक है। एक–एक इंच भूमि के लिए युद्ध करते हुए बेगम जब 18 मार्च 1858 को पराजित हुई तब लखनऊ पतन के बाद उन्होंने रैकवार राजपूत गुरुबख्श सिंह के भिठौली गढ़ में आश्रय लेना पसन्द किया। आखिर क्यों? क्योंकि बेगम जानती थी कि भिठौली रैकवार राजपूतों की गढ़ी थी और वहाँ तक पहुँचना अंग्रेजों के लिए आसान नहीं था। इसलिए भिठौली में रहकर ही वे क्रांतिकारियों से निकट संपर्क साधती रही। इसके बाद रैकवारों के मुखिया हरदत्त सिंह की बौंडी गढ़ को क्रांति का केंद्र बना कर बेगम दिसंबर सन् 1858 तक वहीं रहकर युद्ध का संचालन करती रही। नागर जी का मानना है कि यहीं से उन्होंने मलका विक्टोरिया के ऐतिहासिक ऐलान के जवाब में स्वदेशवासियों को चेतावनी दी थी। जिसके परिणामस्वरूप बहुत समय तक अवध में क्रांति की ज्वालाएँ धधकती रहीं। बहराइच में क्रांतिकारियों को पराजित करने के बाद जब लॉर्ड क्लाइड लड़ते– भिड़ते बौंडी पहुँचे तो राणा, बेगम, नाना साहब, मोहम्मद हुसैन नाज़िम, राणा देवीबख्श आदि ने अद्‌भुत उत्साह के साथ, डटकर अंग्रेजों से जमकर युद्ध किया। बौंडी गढ़ के धाराशाही होने पर ये लोग तितर–बितर होकर नेपाल की सीमा में प्रविष्ट हो गए। बेगम के साथ उनके कई साथी और कई हजार सेना भी थी। उनकी नेपाल से होकर कलकत्ते पर आक्रमण करने की योजना थी जो विषम परिस्थितिवश संभव नहीं हो सकी। यहीं काठमाण्डू में रहते हुए बेगम ने सन् 1869 में पुत्र बिरजीस कदर का विवाह किया और तदुपरांत सन् 1874 में क्रांति की इस अमर तारिका ने नश्वर संसार से मुक्ति ले ली।

ईनिस, चार्ल्स बॉल, रसल आदि अन्य अनेक इतिहासकारों का आरोप है कि बेगम हजरतमहल ने अपने बेटे के हितों की रक्षा के लिए ही अवध को एकजुट कर अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह के लिए उकसाया था, किन्तु नागर जी इस बात को मानने के लिए तैयार नहीं। उनके विचारानुसार बेगम का स्फूर्तिदायक, शौर्यपूर्ण चरित्र इस बात का प्रमाण है कि उन्होंने जो किया देशभक्त की भावना से अभिप्रेरित होकर किया अन्यथा आपसी वैमनस्य और फूट, भय और आतंक के उस प्रलयकाल में एक स्त्री द्वारा हजारों लोगों का अटूट विश्वास प्राप्त कर लेना संभव न था। नागर जी तर्क प्रस्तुत करते हुए लिखते हैं: "एक स्त्री, भले ही वह कितनी भी चतुर क्यों ना हो, केवल अपने बेटे या नजरबंद पति के नाम पर वफादारी की भावना नहीं जगा सकती। जब तक सामूहिक स्वार्थ की समस्या न हो, समूह के स्वाभिमान का प्रश्न न हो, तब तक ऐसा संगठन नहीं हो सकता जैसा अवध में बेगम हजरतमहल के द्वारा किया गया था – – – – उसके पीछे खरे विद्रोह का तप था।"[29]

बेगम हजरतमहल पर एक अन्य बड़ा आरोप जो उनके उज्जवल व्यक्तित्व को दागदार बना देता है वह यह है कि नेपाल जाकर उन्होंने यह बयान दे दिया कि सिपाहियों ने उनके बेटे को जबरदस्ती गद्दीनशीन कर दिया, उनका और उनके बेटे का अंग्रेजों से कोई वैर नहीं। इस प्रकार गदर का सारा भार सिपाहियों पर डालकर बेगम ने स्वयं को, अपने बेटे बिरजीस को विद्रोह के संपूर्ण अभियान से अलग कर लिया। इससे बात की शक्ल यह हो गई की बेगम ने सिपाहियों के भय से गदर में भाग लिया और नागरजी को यह बात कदापि स्वीकार्य नहीं। उनका मानना है कि बेगम का यह बयान उनके क्रांति से संबंधित

पूर्व इतिहास को छुपा नहीं सकता। उन्होंने लिखा है कि बौंढ़ी गढ़ की पराजय के उपरांत बेगम, उनके क्रांतिकारी साथी और कई हजार सैनिक तितर–बितर होकर नेपाल के जंगलों में पहुंच गये। वहाँ से बेगम ने जब नेपाल के राणा जंगबहादुर से सहायता और शरण मांगी तो जवाब में राणा ने कप्तान निरंझन मांझी के हाथ पत्र भिजवाया कि बेगम उनके किसी प्रकार की सहायता की आशा न रखते हुए अंग्रेजों से मित्रता कर लें। राणा ने ऐसा पत्र क्यों लिखा? कारण स्पष्ट करते हुए नागर जी ने लिखा है कि उस समय नेपाल की घरेलू राजनीति कमज़ोर थी और राणा को स्वयं अपनी सेना में विद्रोह की आशंका दिखाई दे रही थी, इसलिए उन्होंने अंग्रेजों से शत्रुता मोल लेना उचित नहीं समझा। ऐसे में जब राणा को बेगम की ओर से मम्मू खाँ का नकारात्मक उत्तर प्राप्त हुआ कि "न हमें आपकी मदद चाहिए और न हम अंग्रेजों से मेल करेंगे," तो उन्होंने प्रत्युत्तर दिया कि यदि बेगम और उनके साथियों ने अंग्रेजों से मेल नहीं किया तो वे सभी एक तरफ से अंग्रेजों द्वारा और दूसरी ओर से राणा द्वारा मारे जाएँगे। इस आशय का संदेश भेजने के साथ ही उन्होंने उन लोगों का रसद पानी भी रुकवा दिया। ऐसे में बेगम ने समझदारी से काम लिया और सबके हित को ध्यान में रखते हुए सोनार पर्वत के रास्ते नये कोट गयी। वहाँ जाकर राणा को बहुमूल्य रत्नालेकार भेंट स्वरूप दिये और बड़ी ही विवशता के साथ राणा के कहे अनुसार इस प्रकार का बयान लिखकर दे दिया। ऐसा करने पर उन्हें नेपाल में शरण तो मिल गयी किन्तु उनकी अपने क्रांतिकारी साथियों के साथ नेपाल के रास्ते कलकत्ता पर आक्रमण की जो योजना थी वह विफल हो गई। स्वविवेक के आधार पर कारण प्रस्तुत करते हुए नागर जी ने लिखा है की "ऐसे में बेगम को तोड़ने के लिए संभवतः यह धमकी दी गई हो कि कोलकाता पर हमला करते ही वाजिदअली शाह और बिरजीस कदर मार डाले जाएँगे – और यह धमकी काम कर गई हो। आखिरकार बेगम स्त्री थी और दुखियारी मां थी।"[30] इस प्रकार अपने इकलौते बेटे के मोहवश या वाजिदअली शाह द्वारा भेजे गए किसी गुप्त संदेश के तहत बेगम ने अपने कदम पीछे खींच लिये। नागर जी का यह तर्क भले ही सबके गले न उतरे परन्तु बेगम के क्रांतिकारी व्यक्तित्व को कोई नकार नहीं सकता। काठमाण्डू की एक मस्जिद के कब्रिस्तान में दफन बेगम का जिस्म आज भी उनकी वीरता की कहानियाँ सा कहता सुनाई पड़ता है।

नागर जी ने सत्य ही लिखा है कि अवध में क्रांति का इतिहास वास्तव में बेगम हजरतमहल का ही इतिहास है। बचपन से लेकर राजमाता बनने तक सामन्ती जीवन का नरक भोगने के बावजूद कुंठा और वेदना से जड़ीभूत न होने वाला बेगम का क्रांतिकारी चरित्र सम्पूर्ण नारी जाति के लिए एक आदर्श है, प्रेरणा का स्त्रोत है। वे सत्य ही अवध की रानी लक्ष्मीबाई थी । 1857 के स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में उनका नाम सदैव आदर और सम्मान के साथ लिया जाएगा।

संदर्भ

1. गदर के फूल, दो शब्द, प्रकाशन शाखा सूचना विभाग उत्तर प्रदेश संस्करण सन् 1957।
2. धर्मयुग, अगस्त 1964 में रामविलास शर्मा द्वारा लिखित पंडित अमृतालाल नागर लेख से उद्धृत – पृ. 49।
3. गदर के कुल – पृष्ठ 93।
4. तदैव – पृष्ठ 260।
5. तदैव – पृष्ठ 260।
6. तदैव – पृष्ठ 260।
7. तदैव – पृष्ठ 104।
8. तदैव – पृष्ठ 260।

9. तदैव – पृष्ठ 42 |
10. तदैव – पृष्ठ 253 |
11. तदैव – पृष्ठ 246 |
12. तदैव – पृष्ठ 46, 47 |
13. तदैव – पृष्ठ 156 |
14. तदैव – पृष्ठ 20 |
15. तदैव – पृष्ठ 24 |
16. तदैव – पृष्ठ 40 |
17. तदैव – पृष्ठ 52 |
18. तदैव – पृष्ठ 19 |
19. तदैव – पृष्ठ 97 |
20. तदैव – पृष्ठ 129 |
21. तदैव – पृष्ठ 143 |
22. तदैव – पृष्ठ 147 |
23. तदैव – पृष्ठ 109 |
24. तदैव – पृष्ठ 253 |
25. तदैव – पृष्ठ 261 |
26. तदैव – पृष्ठ 108 |
27. तदैव – पृष्ठ 262 |
28. तदैव – पृष्ठ 108 |
29. तदैव – पृष्ठ 259 |
30. तदैव – पृष्ठ 272 |